COVERAGE UPDATE SUCCESSFUL SPINAL DEFORMITY CORRECTION IN ISIC

The Hindu, Pg- 4
Date: 10th Oct. 2017

New lease of life for boy with spine deformity

Doctors reduce curvature of spine from 110 to 40 degrees

STAFF REPORTER
NEW DELHI

Doctors at the Indian Spinal Injuries Centre (ISIC) have successfully operated on a 21-month-old boy suffering from kyphosis or spinal cord deformity.

kyphotic deformity is excessive outside curvature of the spine which causes hunching of the back. Gururaj Sangondimath, consultant, spine surgery, ISIC, said: "The child was in a painful condition and suffering from tuberculosis of the spine with kyphotic deformity."

"An MRI revealed destruction of the backbone due to tuberculosis, which caused severe deformity and spinal cord compression leading to weakness in the legs. This was a highly challenging case of kyphosis, especially due to the age of the patient. It is for the first time in India that such a young child has successfully undergone a spinal deformity correction."

The 21-month-old boy with his parents. *SPECIAL ARRANGEMENT

Kyphotic curve

Generally, the upper back spine is curved outward to a certain degree, which in medical terms is called kyphosis or the "kyphotic" curve. This causes the spine to bend forward. The normal curvature of the neck and lower back bends the spine inward.

Challenging surgery

These outward and inward curves of the spine help it bear the load of a person with less energy consumption. Abnormal curvature is known as kyphotic deformity.

In this case, the boy had a curvature of 110 degrees against the normal curvature of 40 to 45 degrees.

"Considering the age of the child, performing a surgery for deformity correction was highly challenging for the team. At this age, children are very sensitive when it comes to blood loss. The team successfully conducted the surgery without any significant blood loss.

There were other challenges like monitoring the patient's functional integrity during the surgery using neuro-monitoring methods. Additionally, there were anesthetic challenges.

It was probably also for the first time in India that pedicle screws were inserted in a patient of this age," said Dr. H.S. Chhabra, medical director and chief of spine services, ISIC.

Asian Age , Pg- 12
Date: 12th Oct, 2017

Docs correct deformity in spine surgery of a toddler

AGE CORRESPONDENT
NEW DELHI, OCT. 9

A 21-month-old infant underwent a deformity correction surgery at a city hospital, making it India's youngest spinal deformity correction case.

The boy was suffering from a spinal cord deformity called kyphotic deformity, the excessive outside curative of the spine which causes hunching of back. The child was unable to stand or walk and was in severe pain when he was brought to doctors at Indian Spinal Injuries Centre in south Delhi.

"The child was indeed in a painful condition and was suffering from tuberculosis of spine with kyphotic deformity. An MRI conducted on the boy revealed that there was destruction of backbones due to tuberculosis, which was causing a severe deformity and spinal cord compression, leading to weakness in the legs. This was a highly challenging case of kyphosis, especially due to the age of the patient," said Gururaj Sangondimath, consultant spine surgery at Indian Spinal Injuries Centre.

It is for the first time in India that such a young child has successfully undergone a spinal deformity correction, he added.

DNA, Pg - 2
Date: 10th Oct, 2017

Kid undergoes spinal surgery

First time in the country, a 21 months old child underwent spinal deformity correction surgery at the Indian Spinal Injuries Centre. Samay, the patient, had been suffering from Tuberculosis, the infection of which spread to his spine. ISIC Consultant Dr Gururaj Sangondimath confirmed that the child was going through painful phase. The surgery that happened on August 21, took six hours to complete and his condition is stable now. Only children above 3 years used to be operated before this.

Millennium Post, Pg- 3
Date: 10th Oct, 2017

21-month-child operated upon successfully for spinal disorder

OUR CORRESPONDENT

NEW DELHI: Twenty-one-month-old boy got a new lease of life after the successful operation of Kyphotic deformity (spinal disorder). The child was suffering from a spinal cord deformity, hunching of back. The boy was unable to stand or walk and was in severe pain when he was admitted to Indian Spinal Injury center.

Explaining more about the case, Dr Gururaj Sangondimath said; "The child was indeed in a painful condition, and was suffering from tuberculosis of spine with kyphotic deformity. We conducted MRI, which revealed that there was destruction of back bones due to tuberculosis, which caused severe deformity and spinal cord compression leading to weakness in the legs. This was a highly challenging case of kyphosis, especially due to the age of the patient. It is for the first time in India that such a young child has successfully undergone a spinal deformity correction."

According to consultant, "It took a 4-hour-long surgery to correct the deformity of spine. The surgery was successful as the deformity was corrected by reducing the curvature to 40 degrees from 110 degrees. After a satisfying final evaluation, the boy was discharged in the company of his overjoyed family members.

"At this age, children are very sensitive for blood loss. The team successfully conducted the surgery without significant blood loss. There were challenges for monitoring the patient's functional integrity during the surgery using neuromonitoring methods," said Dr H S Chhabra, Medical Director, Indian Spinal Injuries Centre.

Navodaaya Times, Pg - 3
Date: 10th Oct, 2017

सर्जरी से ठीक की 21 माह के बच्चे की रीढ़

देश में पहली बार हुई ऐसी सर्जरी

नई दिल्ली, 9 अक्तूबर (ब्यूरो) : दिल्ली के इंडियन स्पाइनल इंजरी सेंटर के डॉक्टरों ने पहली बार एक साल 9 माह के बच्चे की जटिल सर्जरी की है। राजस्थान के सीकर के समीप श्रीमाधोपुर गांव निवासी समय सिंह को जन्म के करीब 14 माह बाद चलता हुआ देखकर परिजन फूले नहीं समा रहे थे लेकिन, कुछ समय के बाद ही बच्चा अपने पैरों पर खड़ा होने में भी सक्षम नहीं रहा। मेडिकल जांच में टीबी ग्रस्त होने से रीढ़ की हड्डी में संक्रमण का खुलासा हुआ। जिसके बाद डॉक्टरों ने दो बार सर्जरी कर बच्चे की तकदीर बदल डाला। इंडियन स्पाइनल इंजरी सेंटर के कंसल्टेंट डॉ. गुरुराज संगोनदीमथ ने बताया कि बच्चा वास्तव में एक दर्दनाक स्थिति का सामना कर रहा था। मासूम क्युफोटिक नामक बीमारी के अलावा रीढ़ की टीबी से जूझ रहा था। बच्चा जब उनके पास एक अप्रैल 2017 को पहुंचा उस वक्त बच्चे की स्थिति विकलांगता के करीब थी। जिसके बाद उसपर उपचार और सर्जरी का कोई असर नहीं होता। जबकि इतनी छोटी सी उम्र में इस बच्चे का ऑपरेशन करना डॉक्टरों के लिए किसी बड़ी चुनौती से कम नहीं था। मेडिकल डायरेक्टर डॉ. एचएचएस छाबरा के मुताबिक समय देश का इकलौता ऐसा बच्चा है, जिसकी एक साल 9 माह की आयु में रीढ़ की हड्डी की सर्जरी की गई। अभी तक 3 वर्ष से ऊपर के बच्चों की ही सर्जरी हो सकी थी लेकिन समय की सर्जरी से रीढ़ की हड्डी की वक्रता को 110 से 40 डिग्री पर लाने सफलता मिली है।

नवोदय टाईम्स Tue, 10 epaper

Hindustan, Pg - 5
Date: 10th Oct, 2017

दो वर्ष से छोटे बच्चे की रीढ़ का ऑपरेशन

पहली बार

नई दिल्ली | कार्यालय संवाददाता

राजधानी के एक अस्पताल में एक वर्ष नौ महीने के बच्चे समर की रीढ़ की हड्डी का सफल ऑपरेशन किया गया। डॉक्टरों का दावा है कि टीबी के संक्रमण की वजह से रीढ़ की हड्डी में आई विकृति को समाप्त करने के लिए इतने छोटे बच्चे की सर्जरी का देश में यह पहला मामला है।

वसंत कुंज स्थित इंडियन स्पाइनल इंजरीज सेंटर के डॉक्टरों ने रीढ़ की हड्डी में उत्पन्न दोष को ठीक किया। यह बेहद ही चुनौतीपूर्ण था। रीढ़ की हड्डी की वक्रता को 110 से 40 अंश तक कम करने में सफलता हासिल की है।

डॉक्टरों के लिए चुनौती थी

इतने छोटे बच्चे की इस तरह की पहले कोई सर्जरी नहीं की गई थी। उसकी हड्डियों को जोड़ने के लिए इतने छोटे स्क्रू लगाना भी चुनौतीपूर्ण था। डॉ गुरराज के अनुसार बच्चा अब स्वस्थ है। हड्डियों के जुड़ जाने तक उसे डॉक्टरों के संपर्क में रहना होगा। बच्चे का टीबी का इलाज चल रहा है।

बच्चे की उम्र कम होने के बावजूद सर्जरी के लिए इंतजार नहीं किया जा सकता था। देर होने पर पैर पूरी तरह कमजोर हो सकते थे। बच्चे की रीढ़ की हड्डी प्रभावित हो चुकी थी।

–डॉ एचएस छाबड़ा, चिकित्सा निदेशक, इंडियन स्पाइनल इंजरीज सेंटर

ठीक से नहीं चल पाता था : रीढ़ की हड्डी की शल्य चिकित्सा के विशेषज्ञ डॉ गुरराज संगोनदीमथ ने सोमवार को बताया कि अप्रैल में जब बच्चा उनके पास आया तो पैरों में कमजोरी थी। इस वजह से वह ठीक से चल नहीं पाता था। उसे तेज दर्द भी था। बच्चे को क्यूफोटिक विकृति थी। इसमें झुकाव की वजह से रीढ़ की हड्डी बाहर की ओर होने लगी थी। समर नाम का यह बच्चा इस विकृति के साथ ही रीढ़ की टीबी से भी पीड़ित था। टीबी की वजह से हड्डियों को नुकसान हुआ था।

Amar Ujala , Pg - 8
Date: 10th Oct, 2017

अनोखे ऑपरेशन से डॉक्टरों ने समय का बदल दिया समय

देश में पहली बार एक साल 9 महीने की उम्र के बच्चे का ऑपरेशन , मेरुदंड में टीबी होने की वजह से फैल गया था संक्रमण

मां के साथ समय

रीढ की हड्डी में लगे स्क्रू।

अमर उजाला ब्यूरो
नई दिल्ली।

पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा टीबी मरीज भारत से ही हैं। लेकिन क्या आपको पता है यह बीमारी इंसान के मेरुदंड पर भी वार कर सकती है, जिसकी वजह से न सिर्फ संक्रमण, बल्कि मरीज पूरी तरह विकलांग भी हो जाता है।

इसी बीमारी को लेकर दिल्ली के इंडियन स्पाइनल इंजरी सेंटर के डॉक्टरों ने पहली बार एक साल 9 माह की आयु के बच्चे का सफल ऑपरेशन किया है। राजस्थान के सीकर के समीप श्रीमाधोपुर गांव निवासी समय सिंह को जन्म के करीब 14 माह बाद जब चलते देखा तो उसके मां और पिता की खुशियों का ठिकाना नहीं था। लेकिन, चंद ही वक्त में समय सिंह ने चलना बंद कर दिया। मेडिकल जांच में पता चला कि वह टीबी ग्रस्त है और उसकी रीढ़ की हड्डी में संक्रमण फैल गया है। इसके बाद डॉक्टरों ने दो बार ऑपरेशन कर समय का समय ही बदल दिया।

इंडियन स्पाइनल इंजरी सेंटर के कंसल्टेंट डॉ. गुरराज संगोनदीमथ ने बताया कि बच्चा वास्तव में एक दर्दनाक स्थिति से गुजर रहा था। इस मासूम सी जान को क्युफोटिक नामक बीमारी के अलावा रीढ़ की टीबी भी हो गई थी।

जब यह उनके पास एक अप्रैल 2017 को पहुंचा उस वक्त बच्चे की स्थिति यह थी कि कभी भी वह विकलांग हो सकता था। फिर ऑपरेशन या इलाज का कोई असर उस पर नहीं होता। एमआरआई और सीटी स्कैन में रीढ़ की हड्डी काफी मुड़ी हुई दिखाई दी। इतनी छोटी सी उम्र में इस बच्चे का ऑपरेशन करना डॉक्टरों के लिए किसी बड़ी चुनौती से कम नहीं था।

छलक उठे मां के आंसू

समय के बारे में पूछते ही उसकी मां उर्मिला देवी की आंखों में आंसू छलक उठे। उन्होंने रोते हुए बताया कि जब उनका बच्चा पैरों से नहीं चल पा रहा था तो वे उसे लेकर जयपुर गईं। वहां बच्चे को निमोनिया बताकर डॉक्टरों ने चलता किया। चूंकि समय के पिता जयप्रकाश दिल्ली पुलिस में बतौर ड्राइवर हैं। इसलिए वे बच्चे को लेकर आरएमएल पहुंचे। यहां मेडिकल टेस्ट कराने के लिए बीएलके अस्पताल भेजा गया। इसी बीच इंडियन स्पाइनल इंजरी सेंटर के बारे में जानकारी मिली और बच्चे को यहां लेकर पहुंचे।

दो बार ऑपरेशन हुआ

डॉक्टरों ने बताया कि एक अप्रैल को समय के भर्ती होने के बाद मेडिकल टेस्ट हुए। दो दिन बाद उसका ऑपरेशन शुरू हुआ। करीब 6 घंटे बाद समय का ऑपरेशन सफल रहा। चूंकि उसकी उम्र सर्जरी लायक नहीं थी। इसलिए डॉक्टरों ने थोड़ा वक्त दिया। 21 अगस्त को समय की फिर सर्जरी की गई और अब वह पूरी तरह से स्वस्थ्य है।

अनोखे ऑपरेशन से डॉक्टरों ने समय का बदल दिया समय

देश में पहली बार एक साल 9 महीने की उम्र के बच्चे का ऑपरेशन , मेरुदंड में टीबी होने की वजह से फैल गया था संक्रमण

मां के साथ समय

रीढ की हड्डी में लगे स्क्रू।

अमर उजाला ब्यूरो
नई दिल्ली।

पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा टीबी मरीज भारत से ही हैं। लेकिन क्या आपको पता है यह बीमारी इंसान के मेरुदंड पर भी वार कर सकती है, जिसकी वजह से न सिर्फ संक्रमण, बल्कि मरीज पूरी तरह विकलांग भी हो जाता है।

इसी बीमारी को लेकर दिल्ली के इंडियन स्पाइनल इंजरी सेंटर के डॉक्टरों ने पहली बार एक साल 9 माह की आयु के बच्चे का सफल ऑपरेशन किया है। राजस्थान के सीकर के समीप श्रीमाधोपुर गांव निवासी समय सिंह को जन्म के करीब 14 माह बाद जब चलते देखा तो उसके मां और पिता की खुशियों का ठिकाना नहीं था। लेकिन, चंद ही वक्त में समय सिंह ने चलना बंद कर दिया। मेडिकल जांच में पता चला कि वह टीबी ग्रस्त है और उसकी रीढ़ की हड्डी में संक्रमण फैल गया है। इसके बाद डॉक्टरों ने दो बार ऑपरेशन कर समय का समय ही बदल दिया।

इंडियन स्पाइनल इंजरी सेंटर के कंसल्टेंट डॉ. गुरराज संगोनदीमथ ने बताया कि बच्चा वास्तव में एक दर्दनाक स्थिति से गुजर रहा था। इस मासूम सी जान को क्युफोटिक नामक बीमारी के अलावा रीढ़ की टीबी भी हो गई थी।

जब यह उनके पास एक अप्रैल 2017 को पहुंचा उस वक्त बच्चे की स्थिति यह थी कि कभी भी वह विकलांग हो सकता था। फिर ऑपरेशन या इलाज का कोई असर उस पर नहीं होता। एमआरआई और सीटी स्कैन में रीढ़ की हड्डी काफी मुड़ी हुई दिखाई दी। इतनी छोटी सी उम्र में इस बच्चे का ऑपरेशन करना डॉक्टरों के लिए किसी बड़ी चुनौती से कम नहीं था।

छलक उठे मां के आंसू

समय के बारे में पूछते ही उसकी मां उर्मिला देवी की आंखों में आंसू छलक उठे। उन्होंने रोते हुए बताया कि जब उनका बच्चा पैरों से नहीं चल पा रहा था तो वे उसे लेकर जयपुर गईं। वहां बच्चे को निमोनिया बताकर डॉक्टरों ने चलता किया। चूंकि समय के पिता जयप्रकाश दिल्ली पुलिस में बतौर ड्राइवर हैं। इसलिए वे बच्चे को लेकर आरएमएल पहुंचे। यहां मेडिकल टेस्ट कराने के लिए बीएलके अस्पताल भेजा गया। इसी बीच इंडियन स्पाइनल इंजरी सेंटर के बारे में जानकारी मिली और बच्चे को यहां लेकर पहुंचे।

दो बार ऑपरेशन हुआ

डॉक्टरों ने बताया कि एक अप्रैल को समय के भर्ती होने के बाद मेडिकल टेस्ट हुए। दो दिन बाद उसका ऑपरेशन शुरू हुआ। करीब 6 घंटे बाद समय का ऑपरेशन सफल रहा। चूंकि उसकी उम्र सर्जरी लायक नहीं थी। इसलिए डॉक्टरों ने थोड़ा वक्त दिया। 21 अगस्त को समय की फिर सर्जरी की गई और अब वह पूरी तरह से स्वस्थ्य है।

Dainak Jagran , Pg - 8
Date: 10th Oct. 2017

Rashtriya Times , Pg - 2
Date: 2nd Oct, 2017

देश में पहला मामला होने का डॉक्टरों का दावा

एक साल के बच्चे की रीढ़ की सफल सर्जरी

नई दिल्ली (एसएनबी)। राजधानी के एक अस्पताल में एक साल से भी कम उम्र के बच्चे की रीढ़ की हड्डी का सफल ऑपरेशन किया गया है। डॉक्टरों का दावा है कि टीवी के संक्रमण की वजह से रीढ़ की हड्डी में आई विकृति को समाप्त करने के लिए इतने छोटे बच्चे की सर्जरी का भारत में यह पहला मामला है।

जन्म के एक साल के भीतर हुई दो सर्जरियां

एमआरआई में पता चला कि टीबी की वजह से हड्डियों को नुकसान हुआ

बसंत कुंज स्थित इंडियन स्पाइनल इंजरीज सेंटर के डॉक्टरों ने इस सर्जरी में स्पाइनल डिफोर्मिटी करेक्शन कर कई चुनौतियों के बावजूद रीढ़ की हड्डी की वक्रता को 110 अंश से 40 अंश तक कम करने में सफलता हासिल की। सेंटर में स्पाइन सर्विस यूनिट छह के प्रमुख डा. गुरुराज संगोनदीमथ ने सोमवार को सेंटर में प्रेस कांफ्रेंस में यह दावा किया। उन्होंने कहा कि अप्रैल में जब बच्चा उनके पास आया तो उसके पैरों में कमजोरी की वजह से वह ठीक से चल नहीं सकता था और दर्द से पीड़ित था। बच्चे को क्यूफोटिक विकृति थी जिसमें झुकाव की वजह से रीढ़ की हड्डी बाहर की ओर होने लगी थी। पहली सर्जरी 3 अप्रैल को दूसरी सर्जरी 21 अगस्त को संपन्न की गई। फिलहाल इस तरह की जटिल सर्जरी दुनिया में पहली है।

किसकी हुई सर्जरी, चुनौतियां : नौ माह का समर नाम का यह बच्चा इस विकृति के साथ ही रीढ़ की टीवी से भी पीड़ित था। एमआरआई में पता चला कि टीबी की वजह से हड्डियों को नुकसान हुआ था। स्थिति चुनौतीपूर्ण थी क्योंकि इतने छोटे बच्चे की इस तरह की पहले कोई सर्जरी नहीं की गयी।

Haribhoomi , Pg - 1
Date: 10th Oct, 2017

डॉक्टरों ने किया दावा, यह देश का पहला मामला

दो साल से छोटे बच्चे की रीढ़ की सफल सर्जरी

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

- टीबी के संक्रमण की वजह से आई थी विकृति
- वक्रता को 110 अंश से 40 अंश तक कम किया
- ठीक से चल नहीं पा रहा था बच्चा पैरों में दर्द था

राजधानी दिल्ली के एक अस्पताल में एक साल नौ महीने के बच्चे की रीढ़ की हड्डी का सफल ऑपरेशन किया गया। डॉक्टरों का दावा है कि टीबी के संक्रमण की वजह से रीढ़ की हड्डी में आई विकृति को समाप्त करने के लिए इतने छोटे बच्चे की सर्जरी का भारत में यह पहला मामला है।

वसंत कुंज स्थित इंडियन स्पाइनल इंजरीज सेंटर के डॉक्टरों ने इस सर्जरी में स्पाइनल डिफोर्मिटी करेक्शन करके कई चुनौतियों के बावजूद रीढ़ की हड्डी की वक्रता को 110 अंश से 40 अंश तक कम करने में सफलता हासिल की। इंडियन स्पाइनल इंजरीज सेंटर में स्पाइनल सर्जरी विशेषज्ञ डॉ. गुरुराज संगोनदीमथ ने सोमवार को यहां बताया कि अप्रैल में जब बच्चा उनके पास आया तो उसके पैरों में कमजोरी की वजह से वह ठीक से चल नहीं सकता था और दर्द से पीड़ित था। बच्चे को क्यूफोटिक विकृति थी जिसमें झुकाव की वजह से रीढ़ की हड्डी बाहर की ओर होने लगी थी।

टीबी से भी पीड़ित था

समर नाम का यह बच्चा इस विकृति के साथ ही रीढ़ की टीबी से भी पीड़ित था। एमआरआई में पता चला कि टीबी की वजह से हड्डियों को नुकसान हुआ था। उन्होंने कहा कि स्थिति चुनौतीपूर्ण थी क्योंकि इतने छोटे बच्चे की इस तरह की पहले कोई सर्जरी नहीं की गई। उसकी हड्डियों को जोड़ने के लिए इतने छोटे स्क्रू लगाना भी चुनौतीपूर्ण था। समर अब पूरी तरह स्वस्थ है।

अभी निगरानी में रहेगा

अभी कुछ साल तक उस पर नियमित निगरानी रखनी होगी और हड्डियों के जुड़ जाने तक उसे डॉक्टरों के संपर्क में रहना होगा। डॉ.गुरुराज ने बताया कि बच्चे का टीबी का इलाज अलग से चल रहा है जिससे उसका संक्रमण समाप्त हो जाएगा। इंडियन स्पाइनल इंजरीज सेंटर के चिकित्सा निदेशक डॉ. एचएस छाबड़ा ने बताया कि बच्चे की उम्र कम होने के बावजूद सर्जरी के लिए इंतजार नहीं किया जा सकता था क्योंकि देर होने पर उसके पैर पूरी तरह कमजोर हो सकते थे।

रीढ़ पर असर था

उन्होंने यह भी कहा कि अगर इस तरह के मामलों में जहां टीबी की वजह से हड्डी में विकृति हो रही है और समय पर टीबी के संक्रमण का पता चल जाए तो सर्जरी की भी जरूरत नहीं पड़ती और टीबी का उपचार करके इस डिफोर्मिटी को खत्म किया जा सकता है लेकिन मौजूदा मामले में रीढ़ की हड्डी प्रभावित हो चुकी थी और उसमें वक्रता आ गई थी।

Online Coverage Also
Publications/News Portals & Online Link

- **Business Standard**
  http://www.business-standard.com/article/pti-stories/boy-suffering-from-spine-deformity-walks-again-after-surgery-117100901385_1.html

- **India Today**
  http://indiatoday.intoday.in/story/boy-suffering-from-spine-deformity-walks-again-after-surgery/1/1065195.html

- **Outlook**
  https://www.outlookindia.com/newsscroll/boy-suffering-from-spine-deformity-walks-again-after-surgery/1164240

- **Daily Pioneer**
  http://www.dailypioneer.com/health-and-fitness/21-month-old-undergoes-successful-spinal-deformity-correction.html

- **Financial Express**
  http://www.financialexpress.com/lifestyle/health/boy-suffering-from-spine-deformity-walks-again-after-surgery/888054/

- **The Hindu**
  http://www.thehindu.com/news/cities/Delhi/new-lease-of-life-for-boy-with-spine-deformity/article19830816.ece

- **PTI Bhasha/Navbharat Times**
  https://navbharattimes.indiatimes.com/india/e0a4a6e0a58be0a4b8e0a4bee0a4b2e0a4b8e0a587e0a49be0a58be0a49fe0a587e0a4ace0a49ae0a58de0a49ae0a587e0a495e0a580e0a4b0e0a580e0a4a2e0a4bce0a495e0a580e0a4b8e0a4abe0a4b2e0a4b8e0a4b0e0a58de0a49ce0a4b0e0a5802ce0a4a6e0a587e0a4b6e0a4aee0a587e0a482e0a4aae0a4b9e0a4b2e0a4bee0a4aee0a4bee0a4aee0a4b2e0a4bee0a4b9e0a58be0a4a8e0a587e0a495e0a4bee0a4a1e0a589e0a495e0a58de0a49fe0a4b0e0a58be0a482e0a495e0a4bee0a4a6e0a4bee0a4b5e0a4be/articleshow/61006550.cms